यदि आप अपने मुंह से यीशु को मान लें और अपने हृदय में
विश्वास रखें, तो आप बच जाएंगे।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

प्रिय ईश्वर के पुत्र/पुत्री, आज एक बार फिर मैं आपका स्वागत करता हूँ कि हम साथ मिलकर परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें, और हर दिन हमारे आत्मा को शुद्ध करने वाले पवित्र जल में स्नान करें।

हम सभी जानते हैं कि बाइबिल ने उद्धार पाने का सरल नियम दिया है: “विश्वास करना” और “स्वीकार करना”। लेकिन दुःखद समाचार यह है कि इस सरल नियम को बहुत ही सामान्य समझ लिया गया है, और इसका वास्तविक अर्थ अक्सर खो जाता है। हम में से अधिकांश को यह सिखाया गया है कि यदि आप बचना चाहते हैं, तो पहला कदम है यीशु पर विश्वास करना कि उन्होंने मृतकों में से पुनर्जीवित हुए। फिर अपने मुंह से स्वीकार करना कि वह प्रभु हैं—यही आपको परमेश्वर का पुत्र बना देता है और आपको स्वर्ग के राज्य का वारिस बनाता है।

यही कारण है कि आज भी शराबी, गालीबाज़, मूर्ति पूजा करने वाला या व्यभिचारी कह सकते हैं, “मैं बच गया हूँ।” क्यों? क्योंकि उन्होंने पहले ही यीशु को मन ही मन स्वीकार कर लिया था।

लेकिन क्या यह वही है जो बाइबिल उद्धार के बारे में कहती है? यदि हम वही श्लोक देखें, तो हमें पता चलता है कि शैतान भी विश्वास करता है और यीशु के सामने कांपते हैं; वे मानते हैं कि वह मरे और पुनर्जीवित हुए (याकूब 2:19), और यह भी स्वीकार करते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र हैं (लूका 4:41)।

यदि आप अपने मुंह से यीशु को मान लें और अपने हृदय में
विश्वास रखें, तो आप बच जाएंगे।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

परमेश्वर की कृपा से आज हम देखेंगे कि विश्वास और स्वीकार करना विशेष रूप से प्राचीन चर्च में कितना गंभीर माना जाता था। आइए कुछ श्लोक देखें:

यूहन्ना 9:18-23
“फिर यहूदी उसके बारे में यकीन नहीं कर सके कि वह अन्धा था और अब देख रहा है। उन्होंने उसके माता-पिता को बुलाया और पूछा: ‘यह तुम्हारा बेटा है, जो जन्म से अंधा था? अब वह कैसे देख सकता है?’ … उसके माता-पिता ने कहा कि वह हमारा बेटा है, पर यह कैसे देखता है, हम नहीं जानते। … उन्होंने ऐसा इसलिए कहा कि वे यहूदियों से डरते थे, क्योंकि यदि कोई यह स्वीकार करता कि वह मसीह है, तो उसे सिनागॉग से बाहर कर दिया जाता।”

देखिए, पुराने समय में यीशु को स्वीकार करने का मतलब था भयंकर परिणाम भुगतना। यह केवल शब्दों का खेल नहीं था; इसे जीवन-भर का संघर्ष माना जाता था।

यूहन्ना 12:42-43
“बहुत से प्रमुख लोग भी उस पर विश्वास करते थे, लेकिन फ़रीसीयों के डर से उसे सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं करते थे। क्योंकि वे मनुष्यों की प्रशंसा को परमेश्वर की
प्रशंसा से अधिक पसंद करते थे।”

यदि आप अपने मुंह से यीशु को मान लें और अपने हृदय में
विश्वास रखें, तो आप बच जाएंगे।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

यीशु के जीवन के बाद भी, किसी ने यदि खुलेआम उन्हें स्वीकार किया, तो उसके लिए तीन चुनौतियाँ थीं: मृत्यु, जेल, या पीड़ा। इसलिए प्रारंभिक चर्च के लोग इतने साहसी थे क्योंकि उनके विश्वास की गहराई अद्भुत थी।

और यही कारण है कि पॉलुस कहते हैं:

रोमियों 10:9-10
“क्योंकि यदि तुम अपने मुँह से यीशु को प्रभु मानो और अपने हृदय में विश्वास रखो कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से
जीवित किया, तो तुम बच जाओगे। क्योंकि हृदय से विश्वास करके धर्म प्राप्त होता है और मुँह से स्वीकार करके उद्धार
प्राप्त होता है।”

यह वचन पुराने समय में बेहद गंभीर माना जाता था। इसका अर्थ था कि जो व्यक्ति यह करता, वह जानता था कि उसे संघर्ष, तिरस्कार और पीड़ा झेलनी पड़ेगी। यह निरंतर क्रिया थी, सिर्फ एक बार कहना ही पर्याप्त नहीं था।

आजकल लोग कहते हैं, “मैंने यीशु को स्वीकार किया,” लेकिन वास्तव में वे अपने जीवन में सच्चे अर्थ में उन्हें नहीं मानते।

यदि आप अपने मुंह से यीशु को मान लें और अपने हृदय में
विश्वास रखें, तो आप बच जाएंगे।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

स्वीकार करने का असली अर्थ है व्यवहार में बदलाव: पुराने बुरे कामों को छोड़ना, शराब, व्यभिचार, नशा, और दुनिया की वासनाओं से दूर रहना।

यदि कोई कहता है कि उसने स्वीकार किया है, लेकिन दुनिया को Christus से ऊपर रखता है, तो वह वास्तव में उद्धार के बहुत दूर है। लेकिन जब आप अपने दिल से, अपने जीवन में, और व्यवहार में यीशु का अनुसरण करना शुरू करते हैं, तो प्रभु आपके पास आएंगे और आपको मार्गदर्शन देंगे।

यह कृपा केवल यीशु से आती है—वह धीरे-धीरे आपको शुद्ध करता है और आपके भीतर उद्धार की जड़ें मजबूत करता है, जहाँ शैतान आपको पकड़ नहीं सकता। आप पवित्र आत्मा द्वारा मुहरित हो जाते हैं (इफिसियों 4:30)।

इसलिए आज ही अपने जीवन में यीशु को स्वीकार करें, और प्रभु आपके साथ रहेंगे।

Share on:
WhatsApp